संपादकीय

प्रिय पाठको! *भारतीय आधुनिक शिक्षा* की अकादमिक संपादकीय समिति की ओर से नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। 26 जनवरी को प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हमने गणतंत्र दिवस (71वाँ) बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस दिन हमारे देश का संविधान लागू हुआ था। हमारे देश का संविधान देश के प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार देने के साथ-साथ विकास करने के समान अवसर प्रदान करता है; ताकि प्रत्येक नागरिक अपना निरंतर विकास करते हुए खुशहाल जीवनयापन कर सके। हमारा संविधान धर्म, भाषा, जाति, जेंडर तथा क्षेत्र आदि के आधार पर बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करता है।

संविधान हमारे मानव अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करता है। विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को इन मानव अधिकारों की जानकारी प्रदान करने के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराने होंगे। इसी संदर्भ में 'विद्यार्थी-शिक्षकों के मध्य मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन' नामक शोध पत्र में विद्यार्थी-शिक्षकों में मानवाधिकारों की जानकारी, उनकी समझ एवं जागरूकता का विश्लेषण दिया गया है।

देश के प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्रदान करना सुनिश्चित किया गया है, अतः सामान्य तथा विशिष्ट बच्चों के लिए ऐसे समावेशी विद्यालय हों, जिनमें विशिष्ट बच्चों के अनुसार शिक्षा का प्रबंध किया जाए। इसी पर प्रकाश डालता हुआ शोध पत्र 'विशिष्ट बच्चों की शिक्षा — एक केस अध्ययन' दिया गया है।

शिक्षा बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक सिद्ध होती है। इसलिए शिक्षक कक्षा में बच्चों को पूर्णता में समझकर सीखने-सिखाने की उपयुक्त शिक्षण-अधिगम गतिविधियाँ अपनाएँ, जिससे बच्चों को सीखने के अधिक अवसर मिल सकें। इसी संदर्भ को प्रतिपादित करता हुआ लेख 'विद्यार्थियों में मनोविकारों की पहचान एवं शैक्षिक रणनीतियाँ' दिया गया है।

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने में अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए अध्यापकों के व्यक्तित्व, ज्ञान, व्यवहार आदि का प्रभाव विद्यार्थियों पर दिखाई देता है। इसी कथन के महत्व को उजागर करता शोध पत्र 'माध्यमिक विद्यालयों में भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' का अध्ययन' दिया गया है।

शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है तथा बिना भाषा के व्यक्ति समाज में रहकर अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता। ऐसे में प्रत्येक समाज अपनी भाषा गढ़ता है। इसलिए भाषा उस समाज की पहचान या संस्कृति बन जाती है। इसी विषय पर आधारित लेख 'भाषा एवं संस्कृति का अंत:गुंथन और इसके निहितार्थ' में भाषा और संस्कृति के संबंधों पर विमर्श प्रस्तुत किया गया है।

हमारे देश की राजभाषा हिंदी है और हिंदी को यह गौरव स्वतंत्रता के बाद प्राप्त हुआ। इस गौरवमयी हिंदी भाषा को गाँधीजी भारतीय जनता तथा भारतीय परिवेश के अनुकूल समझते थे। अतः हिंदी भाषा को बढ़ावा देने पर गाँधीजी के विचारों को 'गाँधीजी और हिंदी भाषा' नामक लेख में दिया गया है।

© NCERT not to be republished

वर्तमान युग डिजिटल युग है और इस युग में अधिकतम शिक्षार्थियों के पास अधिगम के लिए डिजिटल उपकरण के रूप में स्मार्टफ़ोन है। इसके माध्यम से शिक्षार्थी अनेक विषयवस्तुओं के साथ-साथ भाषा भी सीख सकते हैं। अतः भाषा सिखाने में स्मार्टफ़ोन की उपयोगिता पर शोध पत्र 'माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भाषा दक्षता के विकास में स्मार्टफ़ोन' दिया गया है।

संस्कृत भाषा में अनेक विषयों का ज्ञान उपलब्ध है। इस ज्ञान को प्राप्त कर विद्यार्थी भविष्य में अपने विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। अतः संस्कृत भाषा के शिक्षण के निर्माणवादी उपागम पर आधारित शोध पत्र 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संस्कृत विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर निर्माणवादी उपागम की प्रभावशीलता' दिया गया है।

विद्यालय में विद्यार्थियों की विविधता में भाषा का प्रमुख स्थान है। अतः शिक्षक जब विद्यालयों में पढ़ाते हैं, तो उन्हें स्थानीय भाषा का भी ज्ञान होना चाहिए तथा पढ़ाते समय उन्हें बहुभाषी कक्षा को एक संसाधन के रूप में प्रयोग करना चाहिए। इसी पर आधारित लेख 'बहुभाषी कक्षा — एक संसाधन' दिया गया है।

शोध कौशल पर हिंदी भाषा में विकसित अधिगम मॉड्यूल शिक्षार्थियों को सीखने में मदद कर सकते हैं। इसी पर आधारित शोध पत्र 'शैक्षिक शोध में सांख्यिकी अनुप्रयोग एवं व्याख्या पर हिंदी भाषा में विकसित मॉड्यूल की प्रभावशीलता का अध्ययन' दिया गया है।

भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है। भारत में अनेक जनजातियाँ रहती हैं, जो भिन्न-भिन्न संस्कृति, भाषा, धर्म, सामाजिक तथा भौगोलिक स्तर आादि पर विशिष्ट होती हैं। इन जनजातियों की विविधता ही भारतीय संस्कृति को उत्कृष्ट बनाती है। परंतु भौगोलिक स्थिति के कारण ये जनजातियाँ विद्यालयी शिक्षा का पूर्ण लाभ नहीं उठा पातीं। इन जनजाति के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में किन समस्याओं का सामना करना होता है तथा उनकी शिक्षा में कितनी रुचि होती है? इन सब बिंदुओं पर आधारित शोध पत्र 'उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन' दिया गया है।

प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षिक आकांक्षा होती है, जिस पर उसकी शैक्षिक उपलब्धि निर्भर करती है। इसी विषय पर शोध पत्र 'स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध का अध्ययन' दिया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचारी प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished